श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

जनवरी २०१२

वर्ष ८४ श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर अंक १

www.krishnapranami.org

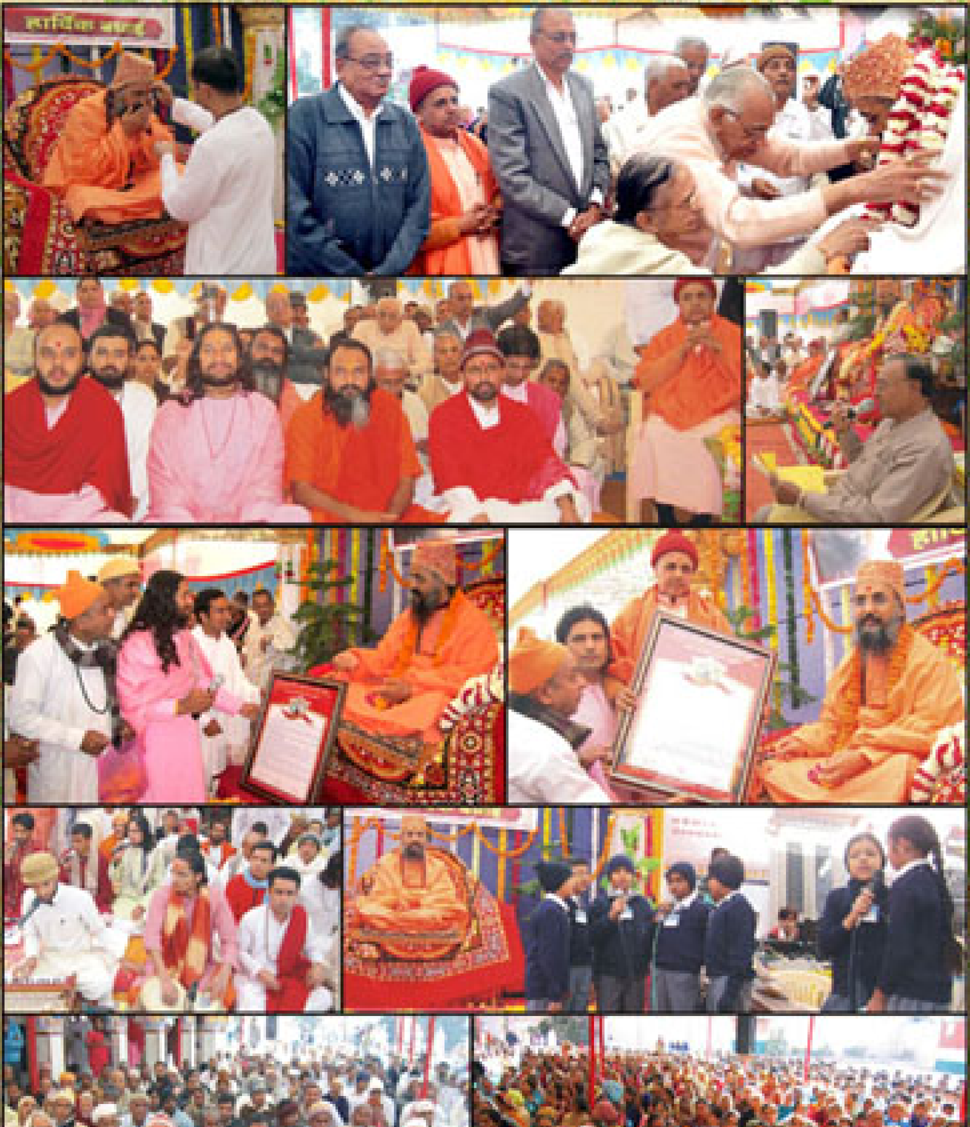

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके ४९ वें प्राकट्योत्सवके उपलक्ष्यमें
श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित विविध कार्यक्रमोंकी झलक ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि.सं : २०६८ निजानन्दाब्द : ४३० बुद्धजी शाका : ३३४

वर्ष : ८४ **जनवरी २०१२** अंक : १

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम– खीजड़ा मन्दिर जामनगर – ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक : स्वामी लक्ष्मण चैतन्य *एवं* श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/- १५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१

फोन : (०२८८) २६७ २८२९फेक्स (०२८८) २५५ १३५३

E-mail : navtanpuri@gmail.com /navtanpuri@krishnapranami.org

website : www.krishnapranami.org / www.krishnadhamusa.org

नव वर्षकी शुभकामना

अन्तराष्ट्रिय केलेन्डरके आधार पर वर्ष २०१२ आरम्भ हुआ है । आप सभीको **नूतन वर्षाभिनन्दनम्** । यह वर्ष आप सभीको उन्नतीकी ओर ले जाय । आप भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकारके लाभ प्राप्त कर अपने जीवनको धन्य बनायें ।

यह वर्ष धर्मके प्रचार प्रसारके लिए बड़ा ही शुभ माना जायेगा । इसी वर्ष **'श्री कृष्ण'** टी.वी. चैनल आरम्भ होने जा रहा है । आप सभीको पुनः **नूतन वर्षाभिनन्दनम्** ।

भक्ति साधना

जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

शरीर, इन्द्रियाँ, मन तथा अन्तकरणकी वृत्तियोंको नियन्त्रित एवं नियमित करनेके लिए साधना बड़ी उपयोगी होती है। साधनाके द्वारा शरीर स्वस्थ रहता है, इन्द्रियाँ नियन्त्रित रहती हैं, मन सहित अन्तःकरणकी वृत्तियाँ शुद्ध होकर एक दिशामें लगनेके लिए योग्य बनती हैं। सामान्यजनोंको यह ख्याल होता है कि साधना सिद्धिके लिए होती है। वास्तवमें साधना सिद्धिके लिए नहीं अपितु शुद्धिके लिए होती है। साधनाके द्वारा अन्तःकरण शुद्ध होते हैं जिससे मनुष्यमें विशिष्ट क्षमता प्राप्त होती है। उसीको लोग सिद्धि कहते हैं और ऐसी ही सिद्धिकी प्राप्तिके लिए साधना करते हैं।

साधनाका प्रभाव जन्म जन्मान्तर पर्यन्त रहता है इसलिए पूर्व जन्ममें की गई साधनाका फल इस जन्ममें भी प्राप्त होता है। साधनासे संस्कार बनते हैं। निरन्तर साधनाके द्वारा अन्तःकरणमें पड़नेवाली छापको ही संस्कार कहते हैं। अच्छे विचार तथा अच्छे कार्योंसे अच्छे संस्कार बनते हैं और बुरे विचार तथा बुरे कार्योंसे बुरे संस्कार बनते हैं। कितने व्यक्ति बाल्यकालसे ही सद्वृत्तिवाले होते हैं। किसीकी भी पीड़ाको देखकर उनका हृदय द्रवित हो जाता है। उनमें परमात्माके प्रति भी स्वाभाविक श्रद्धा होती है। ये सभी लक्षण पूर्वजन्मके सुसंस्कार अर्थात् अच्छी साधनाकी ओर संकेत करते हैं। इसी प्रकार कुछ व्यक्ति बाल्यकालसे ही क्रूर, कपटवृत्तिवाले होते हैं। ऐसी वृत्ति उनके पूर्वजन्मके कुसंस्कारोंकी ओर संकेत करती है। पूर्वजन्मके भले–बुरे संस्कार अन्तःकरणमें अंकित रहते हैं और इस जन्मको भी प्रभावित करते हैं। इसलिए पूर्वजन्मके कुसंस्कारोंको दूर करनेके लिए एवं सुसंस्कारोंको सक्रिय तथा गतिशील बनानेके लिए साधनाकी नितान्त आवश्यकता रहती है। जो व्यक्ति साधनाका महत्त्व समझते हैं वे इसके प्रति उन्मुख होते हैं अन्यथा

अनेक व्यक्तियोंको इस विषयमें कुछ भी ज्ञान नहीं होता है जिससे उनको जीवनकी दिशा ही प्राप्त नहीं होती है । इसलिए वे मानव होने पर भी पशुवत् व्यवहार करते हैं । साधनाके महत्त्वको समझनेके लिए सत्संगकी आवश्यकता होती है । सन्त गुरुजनोंके सत्संगके द्वारा मानवको जीवनकी सही दिशा प्राप्त होती है उससे उसकी दशा बदल जाती है ।

उदाहरणके लिए लोहेके एक टुकड़ेको लेते हैं । लोहेके टुकड़ेको चुम्बकके साथ एक ही दिशामें घसने(रगड़ने) लगेंगे तो वह भी चुम्बकीय गुण प्राप्त करता है । इस प्रक्रियामें चुम्बकसे लोहेके टुकड़ेमें चुम्बकीय शक्ति नहीं जाती है अपितु चुम्बकके साथ एक दिशामें घर्षण होने पर लोहेके टुकड़ेके अणु–परमाणुओंको एक दिशा प्राप्त होती हैं । शक्ति तो उन्हीं अणुओंमें है किन्तु वे एक दिशामें न होनेसे संगठित नहीं हो पाते हैं । चुम्बकके संसर्गसे उन्हें एकदिशा प्राप्त होती है जिससे उन अणुओंकी शक्ति प्रकट होती है । इस प्रकार एक सामान्य लोहा चुम्बक बन जाता है ।

इसी प्रकार मनुष्यके अन्तःकरणकी वृत्तियाँ, जो चारों दिशाओंमें फिरती रहती हैं, साधनाके द्वारा एक सही दिशा प्राप्त करती हैं । उससे अपार शक्ति प्रकट होती है उसीको लोगोंने सिद्धि कहा है । ऐसी साधना सद्‌गुरुके मार्गदर्शनमें हो तो व्यक्तिके अन्तःकरणकी वृत्तियोंको परमात्माकी दिशा प्राप्त होती है जिससे व्यक्ति परमात्माके दर्शन तथा अनुभव प्राप्त कर सकता है । इसीको भक्ति साधना कहा है ।

भक्ति साधनाके द्वारा आत्माकी अनुभूति होती है, परमात्माकी अनुभूति होती है और परमधामकी अनुभूति होती है । भक्तिमें समर्पण होता है । समर्पण प्रेमसे ही सम्भव है इसलिए भक्ति साधनाको प्रेम साधना भी कहा है ।

जिन साधकोंको परमात्माकी दिशा प्राप्त नहीं होती है अथवा जो

साधक परमात्माको लक्ष्य बनाए बिना ही साधना करते हैं ऐसे साधक अन्तःकरणकी वृत्तयोंके एक दिशामें होनेपर प्राप्त शक्तिको सिद्धि मानकर उसीमें मस्त रहते हैं। वे साधनाके मुख्य उद्देश्यसे विचलित होकर भौतिक लाभ प्राप्त करते हैं। अधिकांश साधकोंको भौतिक लाभमें ही रुचि होती है इसलिए भौतिक लाभ प्राप्त करनेके लिए ही कठोर साधना भी करते हैं। उनकी साधना भी निष्फल नहीं होती है किन्तु जिस साधनाके द्वारा पूर्णब्रह्म परमात्माकी अनुभूति हो सकती हो उससे मात्र भौतिक लाभ प्राप्त कर सन्तुष्ट हो जाना अल्पज्ञता ही मानी जायेगी। इसलिए सच्चे साधकोंको अपनी साधनाका लक्ष्य परमात्मा ही बनाना चाहिए। बाह्य साधनासे भौतिक जगतका लाभ प्राप्त होता है तो प्रेम साधनासे परमात्माकी प्राप्ति होती है। इसीलिए महापुरुषोंने भौतिक साधनाको महत्त्व न देकर प्रेम साधनाका ही महत्त्व समझाया है और उसीके लिए प्रेरणा दी है। प्रेम साधनाके लिए महातमि कहते हैं,

प्रेम ऐसी भांत सुधारे, ठौर बैठे पार उतारे ॥
पंथ होवे कोटि कलप, प्रेम पहुँचावे मिने पलक ॥
प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारके पार पियाके पार ॥

अंतःकरणकी शुद्धि होने पर हृदयसे प्रेम प्रकट होता है। प्रेममें इतनी शक्ति होती है कि वह आत्माको इसी शरीरमें रहते हुए ही परमधामका अनुभव करवा सकती हैं। बाह्य साधनाएँ कोटि प्रयत्नोंसे भी परमात्माकी अनुभूति नहीं करवा सकता है जबकि प्रेम साधना क्षणमात्रमें अनुभव करवाती है। इसीलिए इसकी सर्वोपरिता बताई गई है। प्रेम साधना दिलकी साधना है। जबतक दिलकी साधना नहीं होगी तब तक परमात्माकी प्राप्ति नहीं होगी। महामति कहते हैं,

तोलों ना पिउ पाइए, जालों न साधे दिल ।

यहाँ पर दिलकी साधनाका तात्पर्य है हृदय पर्यन्त पहुँचना। शरीरमें

प्रेम प्रकट होनेका स्थान हृदय है। अन्त:करणकी अशुद्धि हमें हृदय पर्यन्त पहुँचने नहीं देती है। साधनाके द्वारा जैसे ही अन्त:करणकी शुद्ध होती है उसी समय हम हृदयके भावको ग्रहण करने योग्य बन जाते हैं। हृदय प्रेमका स्रोत है। उसमें प्रेम ही प्रेम भरा हुआ होता है। किन्तु अन्त:करणकी अशुद्धियाँ हमें प्रेमके इस सागर पर्यन्त पहुँचनेमें बाधक बन जाती हैं। साधनाके द्वारा ये बाधायें दूर हो जाती हैं तब हम स्वयंको हृदयमें पायेंगे अर्थात् हमारा अपना(आत्माका) निवासस्थान हृदयको पाएँगे। हृदयको आनन्दमय कोष भी कहा गया है। आत्माकी उपस्थितिके कारण ही हृदयमें प्रेम भरा हुआ होता है। प्रेमका मूल स्रोत तो पूर्णब्रह्म परमात्मा हैं। हम उनके आनन्द अंग होनेसे हमारा स्वरूप भी प्रेमका ही है। नश्वर शरीरके हृदयमें रहनेके कारण हमारी उपस्थितिसे हृदय प्रेमसे परिपूर्ण हो जाता है। जब हम देहभावसे ऊपर उठकर आत्मभावका अनुभव करने लेगेंगे तब हमें अपनी वास्तविक स्थितिका पता चलने लगेगा। इसीको दिलकी साधना कहा गया है। जिस प्रकार यह हृदय आत्माका स्थान है उसी प्रकार यह परमात्माका भी स्थान है। परमात्मा स्वरूप भी इसीमें अंकित होता है।

महामति श्री प्राणनाथजीने ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा है और ब्रह्मात्माओंको धामहृदया कहा है। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मात्माएँ अपने हृदयमें अपने धनी पूर्णब्रह्म परमात्माका स्वरूप अंकित करती हैं। वे सदैव अपने धनीके सान्निध्यका अनुभव करती हैं। उनके हृदयमें ही धामधनीका वास रहता है।

साधनाका मुख्य उद्देश्य हृदयको धाम बनाना है। यह प्रेमसे ही सम्भव है। परमात्माके प्रति अतिशय प्रेमको भक्ति कहा गया है। भक्ति और प्रेममें तात्त्विक अन्तर नहीं है। प्रेम साधना और भक्तिसाधनाको एक ही माना है। जिसके हृदयमें परमात्माका वास होता है उसी भक्तने अपनी साधनाका यथार्थ फल प्राप्त किया ऐसा माना जाता है। इसलिए हम बाह्य साधनाकी अपेक्षा भक्ति साधना या प्रेमसाधनाकी ओर अधिक ध्यान दें और अपने हृदयमें परमात्माके स्वरूपको अंकित कर इसे परमधाम बनायें।

श्रीमद्भगवद् गीतामें वर्णित
अनासक्ति योगका मूल तत्त्व 'इदन्न मम'

गोविन्द प्रसाद चतुर्वेदी(भिवानी, हरियाणा)

यह मेरा शरीर है, यह मेरा परिवार है, यह मेरी धन–सम्पत्ति है, यह मेरा पद–प्रतिष्ठा एवं अधिकार शक्ति सम्पन्न साम्राज्य या कार्य व्यापार उद्यम है इस भाव अथवा विचारको त्याग कर निस्पृहभावसे जीवन जीना ही अनासक्ति योग है।

सांसारिकताके कारण मायासे परिपूर्ण छद्म जीवन, आचरण, व्यवहार, मोह, आकर्षण, लोकेषणा, संग्रहकी आकांक्षा, सुख भोग एवं भोग विलासकी भावना, शासनकी मनोवृत्ति, कुटिलताकी छद्म नीति, स्वार्थ, लोभ लालच, ऊँच–नीच गरीब–अमीरका भेदभाव, बड़ा होनेकी मान्यता अंहकार, क्रोध, निन्दा, स्तुति इत्यादि अनेक बातें मनुष्यके जीवनको आजीवन आवृत्त किये रहती हैं। जीभके स्वाद और शब्दों(वाणी)के भेदसे ग्रसित व्यक्ति अपने मनोभावोंके वशीभूत होकर असन्तुलित जीवन बिताता है। अज्ञानता एवं अशिक्षाके कारण मूढ़मति व रूढ़ मानव मनुष्यतासे हट जाता है। उसका जीवन निर्मम, हिंसक तथा वेधक हो जाता है। उग्रवाद और विद्रोहके जनक भी ऐसे ही विचार एवं कार्य बनते हैं जो हिंसाको जन्म देते हुए मानव जीवनको अशान्त व असुरक्षित बनाते हैं।

भौतिकताकी अंधी दौड़में सुख, शान्ति और आनन्दकी खोजके लिए मनुष्य न जाने कितने यत्न करता है परन्तु उसे कहीं भी इनकी लेश मात्र भी अनुभूति उपलब्ध नहीं होती। इसका कारण क्या है वह जानते हुए भी जानना नहीं चाहता। आखिर ऐसा क्यों है ?

इसका एकमात्र सरल सा उत्तर है सासारिक माया, मोह, लोभ, क्रोध, अंहकार इत्यादि अनेकानेक मानवीय स्वभावगत विकारोंसे ग्रस्त होनेसे मनुष्यको सुख, शान्ति और आनन्दकी प्राप्ति सम्भव नहीं है। जब तक जीवनमें नैतिकता,

मानवीय जीवन मूल्योंके प्रति समर्पण, त्याग व संयम नहीं आता। मनुष्य सुख, शान्ति और आनन्दसे परे एक पशुकी तरह भटकता रहता है किन्तु जीवनमें इनके आते ही वह मनुष्यके रूपमें वास्तविक जीवन जीने लगता है।

मानव मन चंचल है, इसमें भावनाओंका आरोहण अवरोहण प्रतिपल चलता रहता है। मन बेकाबू अश्वकी तरह है जिस पर मस्तिष्क ही नियंत्रण कर सकता है। मनके बारेमें किसी विद्वान मनोवैज्ञानिकने कहा है,

मन लोभी, मन, लालची, मन कामी, मन चोर।
मनके मते(मनके कहनेमें) न चालिये मन हर पल छिन कछु और ॥

पल–पल, क्षण–क्षण चंचल घोड़े पर सवार मन मनुष्यको स्वेच्छाचारी और दुरूह प्राणी बना देता है, ऐसेमें सुख, शान्ति और आनन्दकी वास्तविक तथा स्थाई अनुभूति उससे कोशों दूर रहती है। इसीलिये श्री कृष्णजीने श्रीमद्गीतामें अर्जुनको ज्ञान देते हुए अनासक्त भावसे कर्म करनेके लिए कहा है,

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥

(गीता ३/७)

हे अर्जुन ! जो पुरुष मनसे इन्द्रियोंको वशमें करके अनासक्त हुआ कर्मेन्द्रियोंसे कर्म योगका आचरण करता है, वह श्रेष्ठ है। तथा **तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचार ॥ (अ. ३ श्लोक ९/२)** अर्थात् हे कौन्तेय(अर्जुन) ! आसक्तिसे रहित होकर परमात्माके लिए कर्म कर रहा हू ऐसी भावनासे कर्मका आचरण कर।

भावनाएँ और आसक्तियाँ मनुष्यको हिंसक, स्वार्थी, कामी और कमजोर बनाती हैं। ये क्रोध, अहंकार, कपट, असत्य, संचय व चोर कर्मकी ओर भी प्रवृत्त करती हैं। यद्यपि ये चित्तवृत्तियाँ मनुष्यमें हमेशा स्थाई रूपसे नहीं रहती परन्तु इनकी आवृत्ति निवृत्ति(आना–जाना) बनी ही रहती है। यदि

मनुष्य अपने मानस(व्यक्तित्व)को इनका स्थाई घर बनने देता है तो वही 'राक्षस' कहलाने लगता है परन्तु संयमी, शील व सदाचारसे युक्त सत्(अच्छी) चित्तवृत्तियोंका स्वामी मनुष्य देवतुल्य या संत स्थितिको प्राप्त कर लेता है। इसलिए मनुष्यको मोह(ममता) और माया छोड़कर तथा आशाओं(उम्मीदों)के दिवास्वप्नसे मुक्त होकर अनासक्त भावसे गुण व कर्मको बर्तना(करना) चाहिए। अनासक्त व निरपेक्ष भावसे जीवन जीना और कर्म करना ही मनुष्यकी श्रेष्ठ नियती है। श्रीमद्भागवद्गीतामें कहा है कि समत्वभाव ही योग है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥
योगस्थः कुरु कर्माणि संङ्ग त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥

(गीता २/४७, ४८)

संसारमें निष्काम भावसे अनासक्तिपूर्वक गृहस्थाश्रममें रहता हुआ भी मनुष्य 'इदन्न मम' की भावनासे त्याग करके मोक्ष अथवा परमात्मा तत्त्वको प्राप्त कर सकता है। अनेक योगियों, ऋषि–मुनियों, संतों, त्यागी तपस्वी लोगों एवं ज्ञानी जनोंने जिस भक्तिभावसे परमात्मा तत्त्वको प्राप्त किया उसे गृहस्थ मनुष्य सांसारिकताके गुण, कर्म, साधन व फलके प्रति अनासक्त रहकर सहज ही प्राप्त कर लेता है। श्रीमद्भागवत गीतामें वर्णित अनासक्ति योगका यही प्रमुख गुण(मुलतत्त्व) है।

• अब तो लाभ लीजिए •

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाको online पढ़नेके लिए

www.krishnapranami.org

श्री तारतम सागर मूल तथा अर्थके साथ online पढ़ने के लिए

www.shritartamsagar.org

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकामें लेख आदि भेजनेके लिए

E-mail : navtanpuri@gmail.com

श्री श्यामा श्याम चालीसा

दोहा

वन्दौ युगल स्वरूप को, वन्दौ श्यामा श्याम ।
अशुभ हरण मंगल करन, श्री श्यामा श्याम का नाम ।।
श्यामा श्याम को नाम वरनऊ, धरूं मैं उनका ध्यान ।
बल बुद्धि विद्या बढ़े मुझे, बढ़े भक्ति और ज्ञान ।।

जय श्यामा श्याम कृपा सागर । जय राधा कृष्ण नटवर नागर ।।
क्षर अक्षर पार धाम तुम्हारा । मालिक हो तुम नाथ हमारा ।।
तुम ही ने सारी सृष्टि रचाई ।सुर नर मुनि सब तुम ने बनाई ।।
तुम ही कारण कर्ता तुम हो ।सकल जगत के धर्ता तुम हो ।।
तुम ही माता पिता तुम हो । तुम ही भाई सखा तुम हो ।।
पच्चीस पक्ष का तेरा धाम । रंग महल मूल मिलावा मुकाम ।।
नवमी भोम दसमी चाँदनी । करत लीला बैठ संग भामिनी ।।
चाँदनी चौक बड़ा है निराला । चमके रेत हीरा सम माला ।।
दोऊ चबूतरा वृक्ष हैं सोहे । लाल हरा दोऊ मन मोहे ।।
सौ सीढ़िया चढ़ ऊपर जायें । सनमुख धनिजी के दर्शन पायें ।।
प्रथम भोम शोभा अति भारी । बैठे सिंहासन जुगल विहारी ।।
भूल भुलावनी दूजी भोम में । उपजत है सुख रोम रोम में ।।
तीजी भोम से दर्शन देत । पशुपक्षी दर्शन सुख लेत ।।
भोम चौथी निरत का ठौर । ढोल मृदंग बाजे कई और ।।
पांचमी भोममें पिया पौढ़त । दर्शन कर सखी पीछे फिरत ।।
भोम छठ्ठी है सुखपाल । फिरत पिया संग होत रसाल ।।
सातमी भोम की छटा निराली । परत दो हिंडोला वहाँ ताली ।।
चार हिंडोला का ताली जहाँ । आठमी भोम बन्यो है तहाँ ।।

दूर देखत पिया नौमी भोम से। पिया पिया बोलत रोम रोम से ॥
फूल भरा है दसमी चाँदनी। बैठ पिया सुख लेत भामिनी ॥
पूर्व तरफ में सातों घाट। बीच जमुनाजी और पाटघाट ॥
पार जमुना के है अक्षर धाम। आते हैं अक्षर दर्शन को श्याम ॥
पश्चिम तरफ है फूलबाग। दूब दुलिचा और नूरबाग ॥
अन्न वन और पश्चिम चौगान। करत क्रीड़ा वहां संग सुभान ॥
तरफ उत्तर में पुखराज ताड़वन। लाल चबूतरा मधुवन महावन ॥
पहाड़ माणिक दक्षिण दिशा सोहे। तालाब हौजकोसर मन मोहे ॥
चौकी वट पीपल की है जहाँ। कुंज निकुंज सोहे वन वहाँ ॥
कण कण में सब नूर भरा है। चहूं ओर चहूं दिश जहूर भरा है ॥
श्यामा और सखी बारे हजार। करते हैं नित्य पिया से रार ॥
मन में पियाजी के आया विचार। देखाँऊ झूठा खेल संसार ॥
देख सखियोंने अक्षर ब्रह्म को। पूछा पियाजीसे खेल भरम को ॥
आए पहले व्रज ग्राम में। मगन भई सखी कृष्ण नाम में ॥
योगमाया को दूजो ब्रह्माण्ड ॥ लीला किन्हों रास अखण्ड ॥
तीसरी बेर जागनी माँहि। आई सखियाँ श्यामा जाँहि ॥
सत्गुरु बन आई श्यामा रानी। दरश पाकर कियो है जागनी ॥
दिया कृष्ण ने तारतम ज्ञान। मगन भए अब करके ध्यान ॥
नवतनपुरी धाम बसाया। यमुनाजी को प्रकट कराया ॥
मिहीराजको देकर मन्त्र। सौंपा धर्म भार सब तन्त्र ॥
जो पढ़े श्यामा श्याम चालीसा। होवे धाममें उनका वासा ॥
'अनुरागी' प्रभु दास तुम्हारा। चरणोंमें है प्रणाम हमारा ॥

दोहा

नयन मन में तुम ही तुम हो, श्यामा श्याम स्वरूप।
निशदिन तुमको ध्यांऊ सदा, निरखूं सदा तव रूप ॥

कुछ उपदेश करो

एक सेठ एक महात्माके पास जाते थे। वे रोज कहते थे महाराज ! कुछ उपदेश करो। महाराज चुप रहते थे। कुछ बोलते नहीं थे। उनतीस दिनोंतक सेठ आये और महात्मा कुछ भी बोले नहीं। जब तीसवें दिन सेठ आये, तब महात्मा बड़े खुश थे। वे स्वयमेव बोले। आज तो हम तुम्हारे घर भिक्षा करनेके लिये चलेंगे। सेठ बड़े प्रसन्न हुए।

भोजनके समय महात्मा अपना खप्पर लिये आये। बोले, हमारे खप्परमें भोजन डाल दो। खप्परमें तो पहलसे ही गोबर था। सेठने कहा, हमने आपके लिये घरमें इतना बढ़िया भोजन बनवाया है, उसे हम गोबरमें कैसे डालें ? महात्मा- अब क्या करें ? सेठ-गोबर निकाल दो। महात्माने गोबर निकाल दिया और खप्परमें भोजन डालनेको कहा। सेठने कहा, नहीं महाराज ! अभी ठीक नहीं हुआ है। अभी गोबर लगा हुआ है। महात्मा बोले, अब क्या करें ? सेठ-पानीसे खप्पर धो लो। महात्मा- लो, धो लिया। सेठ- महाराज ! अभी गन्ध आती है। महात्मा अब क्या करे ? सेठ-रगड़कर पोंछ दो। महात्मा-लो, खूब अच्छी तरहसे रगड़कर पोंछ देते हैं। अब ? सेठने कहा-महाराज ! अब बिलकुल ठीक है। आप भिक्षा स्वीकार कीजिये। महात्माने भिक्षा ली। जब खा-पीकर महात्मा चलने लगे, तब सेठ बोला-महाराज ! आज आप खूब प्रसन्न हैं। आज कुछ उपदेश कर जाओ।

महात्मा बोले। तुम मूर्ख हो। तुमको उपदेश तो कर दिया। तुम समझते नहीं हो। सेठने विनम्रतासे पूछा ! क्या उपदेश किया ? महात्मा हँसकर बोले-सेठ ! तुम्हारे मस्तिष्कमें तो गोबर भरा है। उसमें हम अपना बढ़िया उपदेश कैसे डालें ? पहले गोबर निकालो। फिर उसको धोओ और फिर, उसको खूब अच्छी तरहसे रगड़कर पोंछो। पहले मल दूर करो। फिर वासना दूर करो और फिर विक्षेप दूर करो। जब तुम्हारा मस्तिष्क बिलकुल साफ होगा तब उसमें हम अपना बढ़िया भोजनरूपी उपदेश परोसेंगे, तब तुम उसे खाकर तुरंत तृप्त हो जाओगे। जब तक तुमने गोबर भरकर रखा है, तब तक उसमें हमारा उपदेश कहाँ रहेगा ? **(आनन्द मंजुषा)**

शतं जीवेम शरद:

सूर्य प्रतिदिन नूतन किरणोंद्वारा पृथ्वीको आच्छादित करता है। वृक्षोमें नित्य नूतन पत्र निकलते हैं। पक्षीगण नित्य नूतन कलरव करते हैं। प्रतिदिन नूतन दिवस उदित होता है। सर्वत्र नूतन वातावरण छाया रहता है। बहते हुए जलमें हाथ डाल कर हिलाने पर लगता है नयी नयी जलविन्दु हाथको स्पर्शकर आगे बहती है। समयके इस प्रवाहमें सभीको नूतनताकी झांखना रहती है।

निजानन्द एवं नूतनताकी खोजकी ओर मानव नित्य आगे बढ़ता है। आज हम सभी भी अन्तराष्ट्रिय पञ्चांगके अनुसार वर्ष २०१२ के प्रथम दिनके शुभारम्भमें Happy New Year बोलते हुए एक दूसरेको शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए कुछ नया उमंग लिए नयें विचारोंके साथ नयां कार्य करनेके लिए उत्सुक हो रहे हैं।

श्री ५ नवतनपुरी धामके पवित्र प्रांगण आज अधिक सुन्दर एवं सौहार्दमय बना हुआ है क्योंकि आज श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगदगुरु श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजका शुभ जन्म दिन है।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीको जन्मदिनकी शुभकामना अर्पण करनेके लिए श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके शीर्षस्थ संतजन, विद्वद्जनके साथ-साथ देशके विभिन्न प्रान्त राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ही, मुम्बई, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं गुजरातके सभी जिल्लाओंसे सुन्दरसाथका सुन्दर आगमन हुआ था।

इस पुनीत अवसर पर अपना भाव व्यक्त करनेके लिए नेपाल, यु. के. केनेडा एवं अमेरिकासे भी सुन्दरसाथ पहुँचे थे। मात्र नेपालसे ही ५०० से अधिक सुन्दरसाथकी उपस्थिति थी।

दिनांक ३१ दिसम्बर २०११ को भजन संध्याका सुन्दर आयोजन था। मन्दिर परिसरमें आयोजित इस कार्यक्रममें सन्त, संगीतकार एवं सुन्दरसाथने बड़े उत्साह पूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम मध्यरात्री १२.०० बजे तक चला। ठीक १२ बजे Happy New Year एवं परमपूज्य आचार्य महाराजश्रीके जन्मदिनकी बधाई देकर सभी सुन्दरसाथने विश्राम किया।

दिनांक १ जनवरी २०१२ को प्रातःकालसे ही नूतन वर्षाभिनन्दन व्यक्त करने एवं आचार्य महाराजश्रीको शुभेच्छा व्यक्त करने हेतु पधारे सन्त सुन्दरसाथ एक आपसमें शुभकामना एवं बधाई देकर वातावरणको अत्यन्त मनोहारी बना रहे थे ।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके प्राकट्यउत्सवका विशेष कार्यक्रम प्रातः ठीक ९.०० बजे प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रमका शुभारंभ वाराणसीसे आये संगीत मर्मज्ञ **श्री मनीषानन्द शास्त्रीने** बधाई भजनसे किया। प्रणामी विद्यामन्दिरके छात्रोंने भी सुन्दर शैलीमें गुरुवन्दना द्वारा अपना भाव व्यक्त किया।

इस पावन प्रसंग पर **सन्त श्री अमृतराज शर्मा, स्वामी लक्ष्मण चैतन्य, सन्त नारायण स्वामी, श्री पुरुषोत्तम शास्त्री, श्री राजेन्द्र शास्त्री, श्री कृष्ण शास्त्री, श्री तिलकरत्न गौतम, श्री तीर्थराज ओझा एवं पं. श्री भीमप्रसादजी**के अपने भावको शब्दपुष्पोसे सजाकर परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके चरणोंमें अर्पित किया।

इस पावन प्रसंगपर नेपालके समग्र धर्म प्रचारक मंडलकी ओरसे परमपूज्य आचार्य महाराजश्रीको अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। जिसमें मुख्य रूपसे **संत श्री अमृतराज शर्मा, पं. श्री कृष्णप्रसाद सापकोट, पं. श्री भीमप्रसाद खतिवडा, पं. श्री भरत सुवेदी, पं. श्री घनश्याम अधिकारी, श्री उद्धव शास्त्री, श्री जगतनन्दन शास्त्री, श्री जनार्दन शास्त्री, श्री तीर्थराज ओझा एवं श्री कृष्णप्रसाद तिमलसेना** थे।

श्री ५ नवतनपुरी धामके पुजारी श्री यमनाथ शास्त्रीजी एवं सन्त श्री अमृतराज शर्माजीने सभी सन्तवृन्दकी ओरसे सर्वप्रथम परमपूज्य आचार्य महाराजश्रीको चन्दन एवं सुमनद्वारा पूजन कर वन्दन करते हुए अभिनन्दन व्यक्त किया। तत्पश्चात् श्री ५ नवतनपुरी धामके सेवाभावी ट्रस्टी **श्री नवीनचन्द्र परीख, श्री तुलसीदासभाई ठक्कर, श्री मनसुखभाई संघाणी, अमेरिकासे पधारे हुए श्री रमणभाई पटेल, श्री हिमांशुभाई पटेल, श्री छगनभाई पटेल, श्री अशोकभाई एन्जीनियर कांतिभाई वेणाभाई पटेल, श्री भोगीभाई पटेल, श्री बाबुलाल पटेल, चन्दुभाई पटेल एवं श्रीमती कान्ताबेन ठक्कर** आदि अग्रणी सुन्दरसाथने परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीको उत्तरीय वस्त्र, पुष्पमाला एवं पुष्प गुच्छ आदि अर्पण कर पूजन एवं वन्दन किया। इस पावन दिनके भोजन प्रसादकी सेवा प्रदान करनेवाले राजकोटके धर्मप्रेमी सुन्दरसाथ **श्री परेशभाई लालजीभाई कोराट** परिवारके सभी सदस्योंने भी परमपूज्य आचार्य महाराजश्रीका भावसभर पूजन किया।

इस अवसरपर श्री ५ नवतनपुरी धामके एक्झीक्युटीव ट्रस्टी श्री नवीनभाई परीखने वर्ष २०११ में संस्थाद्वारा विविध क्षेत्रोंमें हुई प्रगतिका विवरण प्रस्तुत कर आगामी कार्यक्रमोंकी जानकारी दी ।

१) प्रणामी विश्व विद्यालयकी स्थापनाके लिए जमीन ली गई है । अभी टी.वी. चैनलका कार्य चल रहा है। उस कार्यको गती मिलते ही विश्व विद्यालयका कार्य शीघ्र प्रारम्भ होगा ।

२) उ. प्र. के मुजफरनगर जिल्लाके बुढ़ानामें मन्दिर निर्माणार्थ श्री ५ नवतनपुरी धामको जमीन प्राप्त हुई है । उसका दस्तावेज एवं भूमि पूजन भी हो गया है । अब नगरपालिका द्वारा मंजुर पत्र मिलते ही वहाँ मन्दिर निर्माणका कार्य प्रारम्भ होगा ।

३)इन्कम टैक्स एक्ट १९६१ कोलम ८० जी(५) के अन्तर्गत श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजडा मन्दिर ट्रस्टको दिनांक ९-४-२०११ से दी गई दानकी रकम इन्कम टेक्समेसे माफ योग्य है । इसका सर्टीफिकेट वर्तमानमें ही इन्कम टेक्स विभागमेंसे प्राप्त हुआ है ।

४) टी.वी. चैनलके साथ-साथ प्रचार प्रसारके विभिन्न माध्यम होते हैं । उन माध्यमोंके द्वारा भी धर्म प्रचार-प्रसार अच्छी तरहसे हो इस हेतुसे प्रणामी एज्युकेशन L.L.P. स्थापना हुई है । जिसमें कोई भी सुन्दरसाथ डिपोजीटके रूपमें रु. २५००० के हिसाबमें डिपोजीट रख सकते हैं । उसका व्याज भी दिया जायेगा ।

५) आप सभीको विदित है कि ''श्री कृष्ण'' टी.वी. चैनल प्रारम्भ करनेका निश्चय हुआ है । अब थोड़े दिनोमें ही प्रसारण प्रारम्भ करनेका दिन निश्चित कर जानकारी दी जायेगी ।

इस प्रसंग पर आशीर्वचन प्रदान करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने कहा,

अन्तराष्ट्रिय पञ्चांगके आधार पर आजका दिन वर्ष २०१२ का प्रथम दिन है । वर्षके प्रथम दिनमें सूर्यके नूतन किरणोंके दर्शन कर आनन्दित होनेके लिए विश्वके विभिन्न स्थानोंमें अनेक लोग सूर्योदय दृश्यस्थलमें पहुँचते हैं । इस शताब्दि अथवा सहस्त्राब्दिके प्रथम सूर्योदयके दर्शनके लिए अनेकों लोगोंने महीनों पहलेसे

योजना बनाई थी । इन घटनाओंका तात्पर्य है कि मनुष्य नूतनताके दर्शनके लिए लालायित रहता है । उसका यह स्वभाव आत्मभावनाको व्यक्त करता है । आत्मा निरन्तर नवीनताके दर्शन तथा अनुभूतिकी कामना करती है । अज्ञानी मनुष्य जड़वत संसारमें नवीनताके दर्शन करना चाहते हैं और जीवन भर परिश्रम करनेपर भी असफल होकर निराशा या हताशाकी पीड़ासे पीड़ित रहते हैं । ऐसेमें ज्ञानी या भक्त आत्मदृष्टिद्वारा परमात्माके दर्शन या अनुभूति प्राप्त कर निरन्तर आनन्दित रहते हैं ।

इससे यह ज्ञात होता है कि नवीनताकी खोज आत्माकी है और वह परमात्माको प्राप्त करने पर ही तृप्त होगी अन्यथा देहभावके द्वारा संसारके विषयभोगकी ओर आकृष्ट बना हुआ मनुष्य जीवन भर अतृप्तिका अनुभव करता हुआ हताशा और निराशाके साथ मृत्यके मुखमें चला जाएगा । महाकवि कालिदास कहते हैं, **क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयताया** जहाँ क्षण-क्षणमें नवीनताके दर्शन होते हैं वही रमणीयताका स्वरूप है ।

आप विचार करें, क्या सांसारिक पदार्थों या विषयभोगोंमें नूतनताके दर्शन होते हैं ? नितान्त नहीं । पूर्णब्रह्म परमात्मा एवं परमधामके दर्शन अथवा अनुभूतिमें ही नित्य नूतनताका अनुभव होता है । इसलिए परमात्माकी अनुभूतिके लिए ही निरन्तर उन्मुख रहना चाहिए। आज वर्ष २०१२ का प्रथम दिन भी हमें यही सन्देश दे रहा है। आप सभी विभिन्न स्थानोंसे पधारे हैं। सभी जन्मदिनकी बधाईयाँ दे रहे हैं। आप सभीको अनेकशः धन्यवाद एवं साधुवाद । किन्तु ध्यान रखें । जन्ममृत्यु तो शरीरका धर्म है । हम अपना अर्थात् आत्माके धर्मका ख्याल रखें । यह शरीर आत्माके लिए वाहन अथवा साधनके रूपमें मिला हुआ है । इसके सदुपयोगसे भौतिक क्षेत्रमें भी बड़े-बड़े कार्य हो सकते हैं। दुनियामें असम्भव कार्यको भी सम्भव बनानेकी क्षमतावाला सर्वोत्तम साधन यह शरीर है ।

विभिन्न प्रकारकी साधनाओंके द्वारा इसे योग्य बनाकर अनेक महापुरुषोंने ब्रह्माण्डके अन्तर्गत परिभ्रमण कर रहे नक्षत्र, तारागण आदिकी गति एवं क्षेत्रको मापा और आज होनेवाले ग्रहणोंको हजारों वर्ष पहले तिथि वार एवं संक्रमण काल सहित बता दिया । यह तो एक लघु उदाहरण मात्र है । ऐसे अनेक कार्य अन्य साधनोंकी सहायता बिना मात्र इस शरीरके द्वारा किए गए हैं ।

जिस प्रकार भौतिक विज्ञानके लिए यह शरीर सर्वोच्च उपयोगी सिद्ध हुआ है उसी प्रकार अध्यात्म विज्ञानके लिए भी यह सर्वोत्तम है । इसीके द्वारा आत्मा स्वयंकी पहचान कर सकती है, ब्रह्म और ब्रह्मधामकी पहचान, दर्शन एवं अनुभूति प्राप्त कर सकती है । इसको सही दिशा देनी होगी । इससे बड़े-बड़े असम्भव कार्य भी सम्भव होंगे । जिस प्रकार चुम्बकके एक दिशामें घर्षण करने पर लोहेके टुकड़ेके अणु परमाणुओंको एक दिशा प्राप्त होती है । जिससे वह सामान्य टुकडा भी चुम्बकीय गुणयुक्त बन जाता है । इसी प्रकार योग्य साधनाके द्वारा शरीरके गुण अंग इन्द्रियोंको एक दिशा अर्थात् परमात्माकी दिशामें निरन्तर लगानेसे परमात्माकी अनुभूति होगी । यह कार्य सद्‌गुरुके मार्ग दर्शनमें होना चाहिए । सद्‌गुरु ही साधकको योग्य दिशा दे सकते हैं । वे उसके अंत:करणकी वृत्तिको ही नहीं अपितु आत्माको भी परमात्माकी दिशा प्रदान करते हैं । महामति कहते हैं,

महामत कहे गुरु सोई कीजे, जो अलख की देवे लख ।
इन उलटीसे उलटाय के, पिया प्रेमें करे सनमुख ॥

(किरन्तन)

हम इसी शरीरके द्वारा परमात्माकी अनुभूति कर सकते हैं । परमात्माकी अनुभूतिके लिए यह एकमात्र उपयुक्त साधन है । इसलिए इसका सदुपयोग करना चाहिए । महामतिका कहना है कि यह शरीर परमात्माकी प्राप्तिके लिए ही मिला है । हम इसके द्वारा मात्र भौतिक कार्य कर इसका दुरुपयोग कर रहे हैं । महामति कहते हैं,

मानखे देह अखण्ड फल पाइए ।

अर्थात् मनुष्य जीवनके द्वारा अखण्ड फलकी प्राप्ति करनी चाहिए । पूर्णब्रह्म परमात्मा और परमधामको ही अखण्ड फल कहा है ।

महामति तो यहाँ तक कहते हैं कि इस शरीरके द्वारा शरीरमें रहते हुए भी(इसी जीवनमें) स्वर्ग, वैकुण्ठ, शून्य निराकार तथा अखण्ड परमधामकी अनुभूति हो सकती है । व्यक्ति अपनी योग्यता, प्राप्त ज्ञान एवं समझके आधार पर अपनी दिशा तय करता है । अनेक व्यक्ति स्वर्ग, वैकुण्ठ या शून्य-निराकारकी प्राप्तिका ही लक्ष्य रखते हैं । उनको उसीमें सन्तुष्टी है । किन्तु ब्रह्म धामकी आत्माएँ ब्रह्मधामकी अनुभूति होनेपर ही सन्तुष्ट होती हैं । नश्वर जगतकी आत्माएं(जीव सृष्टि) स्वर्ग-वैकुण्ठके सुखोंकी कामना करती हैं तो ब्रह्म धामकी आत्माएँ परमधामके

आनन्द(ब्रह्मानन्द)की कामना करती हैं। उनको ब्रह्माण्डके सुखोंसे तृप्ति नहीं होती है। इसलिए वे निरन्तर पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी एवं परमधामकी ही खोज करती रहती है। कहा भी है,

खोज सुहागिनी ना थके, जोलों पार के पारै पार ।
नित खोजे चरनी चढ़े, नए नए करे विचार ॥
सुहागिन तोलों खोजहीं, जोलों पाइए पीउ वतन ।
पीउ वतन पाए बिना, विरहा न जाए निस दिन ॥

(कलश हि. ११/८,१०)

पूर्णब्रह्म परमात्माकी प्राप्ति पर्यन्त ब्रह्मआत्माएँ खोज करती रहती हैं। उनकी खोजी उन्हें निरन्तर उन्नत बनाती ही है। वे अपने धनीका नित्य नूतन चिन्तन करती हैं। अपने धनी और धामको प्राप्त किए बिना उनका विरह शान्त नहीं होता है।

श्री राजजीके दर्शनके सन्दर्भमें महामतिका कथन है कि श्री राजजीका स्वरूप, उनके अंग प्रत्यङ्ग, वस्त्र-आभूषण आदिकी शोभा मध्ये किसीके भी दर्शन होते हैं तो उनमें नित्य नवीनताके दर्शन होते हैं। एक अंगकी शोभाके दर्शन करते हुए भी ऐसा अनुभव होता है कि उसके दर्शन करते रहें। उसीमें क्षण क्षणमें नूतनता दिखती है। इस प्रकार श्री राजजीके अंग, उपाङ्ग, वस्त्र, आभूषण अथवा परमधामके किसी भी दृश्यके दर्शन करते हैं तो उसीमें क्षण क्षणमें नवीनता दिखाई देती है। हमें इसी नित्य नवीनताके दर्शन करने हैं। हम यथार्थमें यही दर्शन करते हुए आए हैं। इसलिए नश्वर संसारमें भी नित्य नवीनता चाहते हैं। आजका दिन हमें इसी नवीनताके दर्शनके लिए प्रेरणा देता है। मनुष्य शरीर इसी नवीनताके दर्शनके लिए है। इस रहस्यको समझकर हम अपने जीवनको धन्य बनायें।

आशीर्वचनके अन्तमें परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने कहा, आप सभी यहाँपर शुभकामनाके लिए पधारे हैं मैं सभीको साधुवाद देता हूँ। सभीके अन्तःकरणमें प्रेम, भाव एवं भक्ति प्रकट हो, सभीके हृदय पवित्र बने, सभीके हृदयसे धर्मके प्रति प्रेमका प्रवाह प्रवाहित हो एवं श्री ५ नवतनपुरी धामके प्रति सभीका अनुराग बढ़ता जाये। आपके प्रेम प्रवाह नवतनपुरी धामकी विकास यात्राको सींचनेमें महत्वपूर्ण

भूमिका निभाये जिससे आगामी सेवाकार्य पुष्पित एवं फलित बनें इसके लिए हम सभी दृढ़ होकर संकल्प करें ।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्री के शुभाशिष पश्चात् उपस्थित सभी सन्तजन, विद्वद्जन विद्यार्थीवृन्द, सुन्दरसाथ, जामनगर शहेरके राजकीय सामाजिक, शैक्षणिक आगेवान भाविक भक्तजन एवं प्रणामी शैक्षणिक संकुलके अध्यापकगण तथा नेपालसे आये हुए शीर्शस्थ धर्म प्रचारकवृन्द सभीने परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीको पुष्पोंद्वारा पूजन कर जन्म दिनकी हार्दिक शुभकामनायें व्यक्त की ।

प्रतिवर्षकी भांति इस वर्षभी इस पावन दिनमें रक्तदान केम्पका सुन्दर आयोजन किया गया था । ५१ सुन्दरसाथने रक्त दानकर अपनी शुभकामना एवं सद्भावना व्यक्त किया इस कार्यके जामनगर शहरके सुप्रसिद्ध हस्पिटलके सहयोगी डॉ. समुदाय प्रो. दिलीप आशर साहेब एवं श्री गणेश गुप्ताका योगदान महत्वपूर्ण रहा । सभीको परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किया ।

इस समग्र कार्यक्रमके विभिन्न विभागमें तन, मन एवं धनसे यथायोग्य सेवा करनेवाले सभी सन्त, सुन्दरसाथको श्री ५ नवतनपुरी धाम एवं परमपूज्य आचार्य महाराजश्रीके शुभाशीर्वाद ।

-योगेन्द्र उप्रेति

जगत्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजको ४८औं शुभजन्मोत्सवको उपलक्ष्यमा शुभ-सन्देश

नेपालका समग्र सुन्दरसाथको तर्फबाट व्यक्त

राधाकृष्ण युगल स्वरूप, प्रभुको सम्झेर पाऊ परी ।
गर्छू प्रेम-प्रणाम सद्गुरुमहाँ, सौभाग्यको यो घड़ी ॥
धर्तीमा पहिलो छ नौतनपुरी, सारापुरी छन् जति ।
आई ब्रह्ममुनि यसै पुरीमहाँ, लीला गरेछन् कति ॥ ?
यस्को जो महिमा छ फेरि कसले, सक्ला र भन्नै अनि ।
तारतम नै पनि यो जहाँ उदय भो, श्री राज मन्त्रै पनि ॥
साक्षात् सद्गुरु गादिआसीन सबै, जो सन्त पैले भए ।
गर्दै धर्म प्रचार तारतमम कै, सज्ज्योति छर्दै रहे ॥
चौधौं गादिपति, श्री कृष्णमणिजी, आचार्यका देनले ।
सारा बाह्र हजार तारतम यी, वाणी सबैले पिए ॥

अद्भूत कार्य ठूलो थियो तर यहाँ, सम्भव् कसोरी भयो ।?
हो लीला प्रभुकै गुरुवर यहाँ, निमित्त बन्नुभयो ॥
हुन्छन् वीर कुनै, अगस्थ्य ऋषिले सारा समुद्रै पिए ।
तर्दै क्षार समुद्र, फेरि कपिले लंका जलाईदिए ॥
गर्छन् वीरहरू असम्भव कुरा, सम्भव गराई दिंदै ।
त्यस्तै वीर र धीर अग्रज यहाँ, आचार्य हाम्रा छँदैं ॥
यस्ता कार्यहरू अरु पनि यहाँ, सदा–सदा नै हउन् ।
कालो कल्मष आँसुरी प्रवृत्तिका चट्टान टुक्री रहुन् ॥
जाहाँ धर्म छ शान्ति मिल्छ सबमा, सन्देश येही दिदैं ।
हाम्रो सद्गुरु गादि अट्टल रहोस्, युगौं युगौं यो सँधै ॥
जन्मोत्सव् जसको छ मंगल घड़ी, अठचालीस वर्षमा ।
लाग्नूभो गुरुबर् मुहूर्त शुभ यो, छौं हामी जो हर्षमा ॥
आयू दीर्घ रहोस् सुस्वास्थ्य बनियोस्, आचार्यका गाथमा ।
आशीर्वाद कृपा युगल् स्वरूपको वर्षी रहोस् माथमा ॥
ईच्छा पूर्ण हउन् सबै सुजनका, पाई गुरु सम्मति ।
संसार सागर नाघि ब्रह्म पदको, पाउन् सबैले गति ॥
नेपालीजन हुन् कि, भारती हउन् गुजरातका जो अनि ।
हाम्रा धर्म र कर्म, सस्कृति सबै, सामान्य छन् यी पनि ॥
हाम्रा लक्ष–उद्देश्य एक बनिउन, छौं भिन्न हामी कहाँ ।
यौटैं ईश्वर मान्दछौं सबजना, हो धर्म यौटै यहाँ ॥
नेपालीजन साथ सुन्दर सँधै, सन्देश बाँड्छौं यही ।
आत्मा एक छ धाम एक सबको, पर्देशमा छौं सबै ॥
सारा देश विदेश शान्ति संगले, उद्योगमा नै बढुन् ।
वातावरण सफा अनुकुल बनोस्, अन्नादि औषध् बढुन् ॥
सारा मानवमात्रका हृदयमा, सद्धर्म धेरै बढुन् ।
आचार्यवर ! यै शुभाशिष मिलोस्, उत्सव सबैले गरुन् ॥
गर्छु गौरव देशको र जनको, नौतनपुरीको पनि ।
झापाली कवि नाम मोहन यहाँ, भन्छन् सबैले अनि ॥
भेटी, फूल सबै छ येहि कविता, मेरा यिनै मञ्जरी ।
गर्छू अर्पण पर्व जन्मदिन यो, मौका मिल्यो यो घड़ी ॥

परम वन्दनीय प्रातः स्मरणीय महाराजश्रीके प्राकट्य महोत्सवके शुभ उपलक्षमें सुस्वास्थ्य दीर्घायु एवं उत्तरोत्तर प्रगतिकी हार्दिक मंगलमय शुभ कामना

ज–जन्म मरणके चक्रसे छुटानेवाले वैद्य।

ग–गन्तव्य स्थान तक पहुँचानेवाले नाविक।

त–तत्वबोध करानेवाले तत्व वेत्ता, तपस्यामें लीन होने वाले तपस्वी।

गु–गुप्त रहस्यको उजागर करनेवाले रहस्योद्घाटक।

रु–रुष्ट व्यक्तिको भी प्रफुल्लित करानेवाले प्रसन्न मुद्रा।

श्री–श्री निजानन्दाचार्यकी गादीमें विराजमान होनेवाले गादीपति।

कृ–कृष्ण परमात्माकी भक्तिमें प्रेरित करानेवाले प्रेरक।

ष्–स–सत्य ज्ञान प्रदान करनेवाले सद्गुरु।

ण–न–नास्तिकतासे आस्तिकताकी ओर उन्मुख करानेवाले पथप्रदर्शक

म–महान कार्यमें जीवनको अर्पित करानेवाले सेवा भावी।

णि–नि–नित्य नवीनकार्य में लगकर धर्मके निर्देशन करनेवाले धर्म परायण।

जी–जीवनको सदैव सेवा और धर्ममें समर्पित करनेवाले कर्तव्यनिष्ठ।

म–मनकी अशान्तिको दूर कर परमात्माकी भक्तिमें अग्रसर करानेवाले शान्तिदूत।

हा–हम सब सुन्दर साथके नयनकी ज्योति और हृदयके धड़कन हृदयवासी।

रा–राजजीके दर्शन करने और करानेवाले द्रष्टा।

ज–जन जनको जागृत ज्ञान प्रदान करनेवाले जगद्गुरु।

जी–जीवको अखण्ड परमधामका ज्ञान देकर आत्माके रूपमें परिणत करानेवाले पारस।

ऐसे जगतगुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजश्रीके पवित्र चरण कमलोंमें। मैं अबोध बालक तीर्थराज ओझाका कोटी कोटी प्रणाम।

–शास्त्री श्री तीर्थ राज ओझा–काठमाडौं नेपाल

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके प्राकट्यकी बधाई

भजन

गुरुदेव आपके प्रागट्य पर, बधाई हो बधाई हो ।
दर्शन आपके सचराचर को, सुखदायी हो, सुखदायी हो, सुखदायी हो ।

धन धन भाग आज हमारे, दर्शन कर निजानन्द प्यारे ।
जहाँ पड़े चरण आपके, वो भूमि फलदायी हो, फलदायी हो, फलदायी हो ।
गुरुदेव आपके......................................

मन मन्दिर में दीप जलाने, आप आए हो भव से तारने ।
कृपा दृष्टि पड़े जहाँ पर, वो चिर तक लाभदायी हो लाभदायी हो लाभदायी हो ।
गुरुदेव आपके...

ढोल मृदंग शहनाई बाजे, नाँचे झूमे सब बधाई गावे ।
सोहबत आपकी इस जहां मे, 'अनुरागी' हितदायी हो, हितदायी हो, हितदायी हो ।

–अनुरागी

विशेष सूचना

श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजडा मन्दिर ट्रस्टको दी गई दानकी राशि इन्कम टैक्स एक्ट की कलम ८०(जी)(५) अन्तर्गत इन्कम टैक्स माफी पात्र है ।

इन्कम टैक्स एक्ट १९६१ की कलम ८०(जी) (५) अन्तर्गत इस ट्रस्टको इन्कम टैक्स कमिश्नर जामनगरकी ओरसे सर्टीफीकेट नं. [redacted](६) / ८०जी(५) / ४८ २१/२०१०-११/२२१८, दि. २०-१२-११ स्थाई रूपमें प्राप्त हुआ है । जिससे इस सस्थामें दिनांक १-४-२०११ से दी गई दानकी राशि ८०(जी) (५) अन्तर्गत इन्कम टैक्स माफी पात्र है ।

दिनांक २७ से ३१ दिसम्बर २०११ पर्यन्त

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म प्रचारक गोष्ठी

श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजड़ा मन्दिर ट्रस्टके तत्त्वावधान एवं श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजके पावन सानिन्नध्यमें दिनांक २७.१२.२०११ से दिनांक ३१.१२.२०११ पर्यन्त श्री ५ नवतनपुरी धाममें श्री कृष्ण प्रणामी धर्म प्रचार गोष्ठीका सुन्दर आयोजन हुआ । इस गोष्ठीमें भारतके विभिन्न प्रान्त एवं नेपाल, अमेरिका, केनेडा, यु.के आदि स्थानोंसे भी जिज्ञासु प्रचारकोंकी उपस्थिति हुई थी ।

प्रतिदिन चार सत्रोंमें गोष्ठीका आयोजन किया गया था :

१) प्रथम सत्र : प्रातः ७.०० बजे से ९.०० बजे ।

२) द्वितीय सत्र : प्रातः ९.३० बजे से ११.३० बजे ।

३) तृतीय सत्र : अपरान्ह ३.०० बजे से ५.०० बजे ।

४) चतुर्थ सत्र : रात्रि ७.३० बजे से ९.०० बजे ।

प्रथम दिवसके प्रथम एवं द्वितीय सत्रमें परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वचनके पश्चात् गोष्ठीके प्रतिभागी धर्म प्रचारकोंका परिचय प्रस्तुत किया गया । सभी प्रचारकोंने अपना परिचय स्वयं देते हुए, प्रचार-प्रसारका अपना क्षेत्र एवं वहाँकी परिस्थिति बताकर जागनी कार्यका ब्यौरा दिया ।

अन्य सत्रोंमें प्रश्नोत्तरीका विशेष कार्यक्रम रखा गया । इसके अतिरिक्त सभी धर्म प्रचारकोनें अपने अपने क्षेत्रमें जागनीका कार्य करते समय आनेवाली कठिनाइयोंको भी परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके समक्ष प्रस्तुत किया ।

धर्म प्रचारकों द्वारा किये गये प्रश्नोंका उचित उत्तर एवं सभीकी समस्याके यथायोग्य समाधान परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने दिया । विशेष रूपसे संप्रदाय पद्धति, सेवापूजा, वीतक एवं श्री तारतम सागरको केन्द्रमें रखकर प्रश्नोत्तरीका कार्यक्रम रखा था ।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने धर्मके प्रचार-प्रसारमें उत्पन्न

कठिनाइयोंको ध्यानमें रखते हुए उन्हें दूर कनेके उपाय बताये । उन्होंने बताये । कि धर्म प्रचारकोंको आत्मचिन्तनकी आवश्यकता है । हम उपदेश देते हैं, वे उपदेश अपने जीननमें चरितार्थ हुए हैं या नहीं ? इसका चिन्तन करना चाहिए। दूसरोंको उपदेश देनेमें चतुरता नहीं किन्तु कुशलता होनी चाहिए। मात्र चतुरता उत्थान नहीं परन्तु पतन है। यदि हम अपने उपदेशोंको अपने जीवनमें उतारते हैं तो वह कुशलता है । चातुर्यका दुरुपयोग करना उचित नहीं है ।

आचार्य महाराजश्रीने 'बडे' और 'महान'का भेद स्पष्ट करते हुए बताया कि बड़े बननेवाले दूसरोंको पीड़ा पहुँचातें है जबकि दूसरोंके दुःख कष्टोंको दूर करनेवाले महान होते हैं। बडा व्यक्ति कभी छोटा भी हो सकता है। किन्तु महान हमेशा महान रहता है। उन्होंने दृष्टान्त देकर समझाया कि महात्मा गान्धीके समयमें पदके हिसाबसे डॉ राजेन्द्र बाबु बडे थे किन्तु महात्मा गान्धी महान थे। महानका कभी पतन नहीं होता है। महान व्यक्ति अनेक पीडाओंको झेलते हुए भी कभी सच्चाई, इमानदारी, नीतिमत्ता, अच्छाई एवं पवित्र आचरणोंसे विमुख नहीं होते हैं ।

परम कृपालु परमात्मा श्री राजजीने मनुष्यको बुद्धि और भावना दोनोंका उपहार दिया है । दोनोंका महत्त्व है फिर भी भावनाका स्तर बौद्धिक स्तरसे ऊँचा है। हमें भावनाओंको सही दिशा देनेका प्रयत्न करना चाहिए । किसीके हृदय पर ठोस पहुँचाना, किसीका हृदय दुखाना भी हिंसा है। **अहिंसा परमो धर्म** प्रचारकोंको इस सिद्धान्तका ख्याल रखना अति आवश्यक है । मात्र कायिक हिंसा ही नहीं किन्तु मानसिक एवं वाचिक हिंसासे भी हमें दूर रहना नितान्त आवश्यक है । यदि तीनों हिंसासे हम अपने आपको बचायेंगे तभी कह सकते हैं कि हम अहिंसा परमो धर्मको सहृदय अपनाते हैं ।

जो व्यक्ति कुछ कमाएगा, जिसके पास सम्पत्ति होगी वही दूसरोंको वितरण कर पायेगा। जो स्वयं खाली होगा वह कैसे दूसरोंको दे सकता है। यही नियम अध्यात्म क्षेत्रमें भी लागु होता है। जो अच्छी तरहसे ज्ञानार्जन

करेगा। उस ज्ञानको भक्तिद्वारा सजायेगा तभी वह उसके लिए कल्याण प्रद होगा । वह अर्जित एवं अनुभवात्मक ज्ञान निष्कामभावसे जब अन्यको बाँटेका तभी उसकी वास्तविक सुगन्धि फैलेगी । तात्पर्य यह है कि हम दूसरोंको समझाते हैं, जगानेकी कोशिश करते हैं, यह अच्छी बात है –किन्तु हम स्वयं कितने समझे हैं यह जानना आवश्यक है। इसीलिए कोरा ज्ञानसे ज्यादा लाभ नहीं होगा जीवनमें भक्तिकी साधना भी होनी चाहिए। जब भक्ति होगी तो श्री राजजीके प्रति श्रद्धा जगेगी। उन पर श्रद्धा रकखर हमें जागनीका कार्य करते रहना चाहिए। धर्मका प्रचार–प्रसार करते रहना चाहिए। फिर तो सच्चाईके मार्गमें आनेवाली कठिनाइयोंको श्री राजजी स्वयं दूर करते जायेंगे। हमें मार्ग स्पष्ट दिखने लगेगा। हमें 'मैं कर रहा हूँ' 'मेरे द्वारा यह हो रहा है' आदि निकृष्ट भावोंका परित्याग करना होगा। जो हो रहा है वह सब कुछ श्री राजजीकी कृपासे हो रहा है। हमें तो एक माध्यम बनाकर श्री राजजीने हमें शोभा प्रदान की है यह उत्तम भाव हृदयमें जगाना चाहिए। इस प्रकार निशदिन हमें श्री राजजीके साथ जुड़े रहना चाहिए।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने विशेष रूपसे सेवापूजाके ऊपर भार देकर कहा वस्तुतः सेवा पूजा एक भाव है। केवल क्रियाका कोई अर्थ नहीं है। क्रियामें भाव मिश्रित होने चाहिए। पूजामें समर्पणका भाव होना चाहिए।

इसके साथ–साथ हमें अपनी पद्धतिका भी पूर्णरूपेण पालन करना चाहिए। उन्होंने सेवापूजाकी एकरूपताके विषयमें भी चरचा करते हुए कहा, हमें अपनी प्राचीन परम्पराका ख्याल रखना चाहिए। कई स्थानोंपर पूजामें विविधता दिखाई देती है। सभी ब्रह्मज्ञानी सन्त महापुरुषोंके भावोंका हमें आदर करना चाहिए किन्तु सम्प्रदायकी पूजा पद्धति एक हो यह अति आवश्यक है।

प्रातःकालीन सेवापूजामें प्रथम आह्वान, प्रभाती, उठापनके पश्चात् आरती होनी चाहिए। आरती पश्चात् परिक्रमा, स्वरूप, आनन्द मंगल, झीलना, चन्दन चढावनी, भोग, अचवन, बिडी (मुखवास) एवं अन्त्यमें

दाहिने तरफ दूजा जो मंदिरसे प्रात:की सेवापूजा पूर्ण होगी । तत्पश्चात् समयानुरूप नित्यपाठ, जप एवं ध्यान किया जाना चाहिए।

सायं कालीन सेवापूजाका प्रारंभ स्तुति : वन्दौ सतगुरु चरणको झीलना–जमुनाजीके घाटमें..। गौरी, आरती, सतगुरु आरतीकी परम्परा है। पूर्णब्रह्म ब्रह्मसे न्यारे यह उठकर गायें तत्पश्चात् आरती (कञ्चन थाल) बोलनी चाहिए। आरती पश्चात् परिक्रमा, नवखंडो आरती, स्वरूप, आनन्द मंगल एवं भोग बोलना चाहिए। भोगके पश्चात् प्रार्थना एवं जप अनिवार्य है।

कई स्थानोंपर सायं कालीन सेवापूजामें स्तुति–वन्दौ सतगुरु चरणको एवं संद्या सुमिरनमें प्राचीन सेवापूजामें स्थित पदोंके अतिरिक्त अन्य पद जोड़नेकी बातको लेकर परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने कहा सभी पद उत्तम है किन्तु हमें उस समय अन्य पद जोड़नेकी आवश्यकता नहीं है। सभी पद गेय हैं उन्हें अपने समयानुरूप अन्य समयपर गायें तो अधिक उत्तम होगा । मंगलाचरण (ब्रह्मसृष्टि लिजियो...) भी नित्यपाठमें हैं उसे नित्यपाठके रूपमें पाठ करना चाहिए। प्रभागी धर्म प्रचारकोंने सेवापूजाकी इस एकरूपताको सहर्ष अपनानेकी घोषणा की ।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने सेवापूजाका भाव समझाते हुए क्षर, अक्षर एवं अक्षरातीत ब्रह्मकी विशद् चरचा की। सेवापूजाके माध्यमसे परमधाम, व्रज, रास एवं जागनी लीलाके महत्त्वको प्रतिपादन किया । इसके साथ–साथ सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज द्वारा की गई साधना, परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्रीराजजीके दर्शन, तारतम मन्त्रका आध्यात्मिक महत्त्व। महामति श्री प्राणनाथजीकी जागनी लीलाको सुन्दर ढंगसे समझाया।

पंचदिवसीय गोष्ठीका कार्यक्रम सुन्दर ढंगसे सम्पन्न हुआ । सभी धर्मप्रचारकोंके मनमें उद्भवित प्रश्नोंका समुचित समाधान मिला । पांच दिन पर्यन्त परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके साथ वार्तालाप एवं प्रश्नोत्तरीका सुन्दर लाभ सभी सन्त विद्वद्जनोंको प्राप्त हुआ ।

प्रभागी धर्म प्रचारकोंकी जिज्ञासाको देखते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने अलगे वर्षकी गोष्ठी श्री नवतनधाम–काठमाण्डौमें करनेका निर्णय किया। उन्होंने कहा तिथिकी जानकारी श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाके माध्यमसे दी जायेगी ।

इस गोष्ठीको सफल बनानेमें श्री ५ नवतनपुरी धामके **पुजारी श्री यमनाथ शास्त्रीजी एवं संत श्री अमृतराज शर्माजीजी**का सुन्दर योगदान रहा। समग्र कार्यक्रमका संचालन श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाके **संपादक स्वामी लक्ष्मण चैतन्यजी**ने सुन्दर ढंगसे किया। परोक्षापरोक्ष रूपसे सेवा करने वाले एवं गोष्ठीमें भाग लेनेवाले सभी सन्त विद्वद्जन एवं धर्मप्रचारकोंको परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किये।

– ***प्रो.दिलीप आशर***

गोष्ठीमें सम्मिलित सन्तजन एवं विद्वद्जन

०१. सन्त श्री अमृतराज शर्मा,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०२. पुजारी श्री यमनाथ शास्त्री,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०३. स्वामी श्री लक्ष्मण चैतन्य,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०४. श्री लीलाधर शास्त्री	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०५. श्री प्रह्लादराज शास्त्री	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०६. श्री राजन शास्त्री,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०७. श्री पुरुषोत्तम शास्त्री,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०८. सन्त श्री चेतन दासजी	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०९. श्री श्यामसुन्दर ओझा	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१०. श्री चन्दन शास्त्री,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
११. श्री राजेन्द्र शास्त्री,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१२. श्री कृष्ण शास्त्री,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१३. श्री कृष्णबाबु प्रणामी	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१४. श्री तिलक रत्न,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१५. श्री रामेश्वर प्रणामी,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१६. श्री योगेन्द्र उप्रेति,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१७. श्री नवीन शास्त्री,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१८. श्री घनश्याम शास्त्री,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१९. श्री गणेश गुप्ता,	श्री ५ नवतनपुरी धाम

२०. श्री प्रकाश आचार्य	श्री ५ नवतनपुरी धाम
२१. श्री बलराम प्रणामी,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
२२. श्री पुरुषोत्तम खतिवडा,	श्री ५ नवतनपुरी धाम
२३. श्री अर्जुनपुरी	श्री ५ नवतनपुरी धाम
२४. श्री हितेश प्रणामी	श्री ५ नवतनपुरी धाम
२५. पं.हरिदास तिमल्सिना	श्री ५ नवतनपुरी धाम
२६. पं.श्री कृष्णप्रसाद तिमल्सेना	बुटवल (नेपाल)
२७. सुश्री भानुबेन प्रणामी,	श्री बाईजीराज आश्रम, धोराजी (गुजरात)
२८. सुश्री गीताबेन प्रणामी,	श्री बाईजीराज आश्रम, धोराजी (गुजरात)
२९. पं. श्री कृष्णप्रसाद सापकोटा,	काठमाडौं(नेपाल)
३०. पं. श्री भीमप्रसाद उपाध्याय,	झापा(नेपाल)
३१. श्री उद्धव बजगाँई(शास्त्री)	काभ्रे (नेपाल)
३२. पं.श्री युगलप्रसाद अधिकारी	काभ्रे(नेपाल)
३३. पं श्री घनश्याम अधिकारी,	काभ्रे(नेपाल)
३४. पं. श्री हेमप्रसाद दाहाल,	काठमाडौं(नेपाल)
३५. पं. श्री सुदर्शन तिमल्सिना,	काभ्रे(नेपाल)
३६. पं. श्री तीर्थराज ओझा	काठमाडौं(नेपाल)
३७. पं. कुशलदास बराल,	चितवन(नेपाल)
३८. पं. भरतमणी सुबेदी,	चितवन(नेपाल)
३९. पं. गोपालकृष्ण तिमल्सिना,	मकवानपुर(नेपाल)
४०. पं. चन्द्रप्रकाश न्यौपाने,	झापा(नेपाल)
४१. श्री जनार्दन शास्त्री,	काठमाण्डौं(नेपाल)
४२. श्री जगतनन्दन शास्त्री,	सुनसरी(नेपाल)
४३. पं. श्री राजकुमार श्रेष्ठ,	चितवन(नेपाल)
४४. पं. श्री गोविन्ददास सिटौला,	चितवन(नेपाल)
४५. पं. श्री कृष्णप्रसाद घिमिरे,	मकवानपुर(नेपाल)
४६. पं.श्री सुदर्शन सापकोटा,	रौतहट(नेपाल)
४७. पं. श्री उदयराज सिग्देल,	काठमाडौं(नेपाल)
४८. पं. श्री दुर्गा गौतम,	इलाम(नेपाल)
४९. साध्वी राजराजेश्वरी,	काठमाडौं(नेपाल)
५०. श्रीमती उषा घिमिरे,	काठमाडौं(नेपाल)

५१. सुश्री नारायणी घिमिरे,	ललितपुर(नेपाल)
५२. सुश्री सपना श्रेष्ठ,	काठमाडौं(नेपाल)
५३. सुश्री गंगा दवाडी,	चितवन(नेपाल)
५४. सुश्री जमुना दवाडी,	चितवन(नेपाल)
५५. श्रीमती गोपिनी सापकोटा,	गोठाटार(नेपाल)
५६. सुश्री यमुना भट्टराई,	ललितपुर(नेपाल)
५७. सुश्री रिल्पा पटेल,	कच्छ(गुजरात)
५८. श्रीमती वनिताबेन,	कच्छ(गुजरात)
५९. सन्त श्री सेवादास गौतम,	रौतहट(नेपाल)
६०. संत श्री चेतनमणि दाहाल,	काठमाडौं(नेपाल)
६१. पं. श्री सुन्दर पन्त,	धादिङ्ग(नेपाल)
६२. पं. श्री गोविन्द प्रसाद काफ्ले,	काभ्रे(नेपाल)
६३. पं. श्री कमल कृष्ण सिग्देल,	काभ्रे(नेपाल)
६४. पं. श्री रामकृष्ण वजगाँई,	काभ्रे(नेपाल)
६५. पं. श्री कृष्णप्रसाद सुवेदी,	दोलखा(नेपाल)
६६. पं. श्री छविलमणि दहाल,	काठमाडौं(नेपाल)
६७. पं. श्री पुष्पराज खतिवडा,	चितवन(नेपाल)
६८. पं. श्री चन्द्रप्रकाश उप्रेति,	झापा(नेपाल)
६९. पं. श्री छविलदास भट्टराई,	झापा(नेपाल)
७०. पं. श्री घनश्याम निरौला,	शुकलाई(असम)
७१. श्री तुतुकाजी पलाञ्चोके,	काभ्रे(नेपाल)
७२. श्री अग्निप्रसाद पौडेल,	धादिङ्ग(नेपाल)
७३. पं. श्री गोपाल दाहाल,	पर्सा(नेपाल)
७४. पं. श्री चेतन कार्की,	वारा(नेपाल)
७५. पं. श्री मस्त बाबा	हरियाणा
७६. पं.श्री मोहन घिमिरे,	गोरखा (नेपाल)
७७. डॉ. अमीचन्द्रभाई पटेल,	हिम्मतनगर(गुजरात)
७८. डॉ. लक्ष्मीबेन पटेल,	हिम्मतनगर(गुजरात)
७९. श्री किरीटभाई बावरिया,	राजकोट(गुजरात)

८०. श्री अरविन्दभाई सोलंकी,	राजकोट(गुजरात)
८१. डॉ. गोविन्दभाई पटेल,	हिम्मतनगर(गुजरात)
८२. श्री अरविन्दभाई वादी,	कालावड(गुजरात)
८३. श्री लखन प्रणामी,	सागर (म.प्र)
८४. महंत श्री योगराज महाराज	अम्बाला (हरियाणा)
८५. श्री मनीषानन्द शास्त्री	वाराणसी (उ.प्र)
८६. साध्वी शारदा दिदी	जूनागढ
८७. श्री मोहनकृष्ण संजेल	भैमाल (नेपाल)
८८. पं.श्री नन्दुदास ओझा	चितवन (नेपाल)
८९. श्रीमती अमृता अधिकारी	काठमाण्डौं (नेपाल)
९०. श्री गोपाल गजुरेल	चितवन(नेपाल)
९१. श्री हरिप्रसाद पोख्रेल	चितवन(नेपाल)
९२. श्री बुद्धिप्रसाद भूर्तेल	काभ्रे(नेपाल)
९३. पं.श्री वेदनाथ देवकोटा	मकवानपुर(नेपाल)
९४. पं.श्री रामहरि घिमिरे	झापा(नेपाल)
९५. श्री हरिप्रसाद कोईराला	इलाम (नेपाल)
९६. श्री यादव कटेल	इलाम (नेपाल)
९७. श्री गोविन्द अधिकारी	काठमांडौं (नेपाल)
९८. संत श्री नारायण स्वाामीजी	पंचमहाल (गुजरात)
९९. शास्त्री मेदनी प्रसाद दाहाल	बडोदरा(गुजरात)
१००. श्री हरिप्रसाद कोईराला	सिलिगुड़ी(प.बं)
१०१. श्रीमती रूपादेवी अधिकारी	चितवन(नेपाल)
१०२. श्री जीवनदास तिवारी	सिक्किम
१०३. पं. श्री केशव लामिछाने	सिन्धुली (नेपाल)
१०४. श्री संजय प्रणामी	कलैया (नेपाल)
१०५. श्री लक्ष्मण ज्योति	श्री कृष्ण प्रणामी मूलमिलावा मानव मंदिर-सूरत
१०६. प्रो.दिलीप आशर साहेब	जामनगर
१०७. श्री दीनानाथ कोईराला	मोरङ्ग (नेपाल)
१०८. श्री निर्मल मैनाली	सिक्कीम
१०९. श्री शुकदेव प्रणामी	काठमाणौं
११०. श्री तोयनाथ ढकाल	चितवन (नेपाल)

गौशालाकी सेवा

परमपूज्य आचार्य महाराजश्रीके जन्मदिनकी खुशीमें श्री कृष्ण प्रणामी गौशालामें गाय दान करने वाले सुन्दरसाथजी :-

एक गायकी सेवा रु. ११०००/

१) श्रीमती दिशाबेन जतिनभाई पीपलिया-राजकोट

हस्ते : मनीषाबेन परेशभाई कोराट.

२)चि. कुणालकुमार परेशभाई कोराट-राजकोट

हस्ते : परेशभाई लालजीभाई कोराट-राजकोट.

३)श्री निनादभाई जगदीशभाई पटेल-राजकोट.

४) धामवासी जशीबेन कांतिलाल पटेल-आमोदरा

हस्ते : कांतिलाल वेणाभाई पटेल

५)धामवासी मोहनलाल टपुभाई मुंगरा-जामनगर

हस्ते : श्रीमती प्रभाबेन मुंगरा

६)धामवासी मायाभाई मेरूभाई बांभवा

हस्ते : भगीरथसिंह वारा

७) श्री कृष्ण प्रणामी धर्म प्रचारक मंडल-नेपाल

८) श्री अमरसिंह सोढा परमार-अहमदाबाद

९) श्री दिनेशभाई पंचाल-अहमदाबाद

१०) धामवासी राजेन्द्रसिंह कालुभाई वारा-कानालुस

घास चारा, दाना एवं लडुकी सेवा करनेवाले सुन्दरसाथजी

५०००/ श्री अशोकभाई भगवानजीभाई-हरिपर

२५००/ श्री कान्तिभाई मोहनभाई सिदपरा-हर्षदपुर

२५००/ सुश्री ज्योतिबेन चेतनकुमार शेठ-मुंबई.

२५००/ श्री केशवलाल प्रभातभाई हुदानी-कच्छ.

२६०१/ धामवासी पांचाभाई लालजीभाई बुमतारिया-नानीवावडी.

हरिपुर निवासी मोहनभाई वीरजीभाई संघाणीकी ओरसे मगफलीका चारा एक ट्रक और एक ट्रेक्टर प्राप्त हुआ है

दिनांक १-१-२०१२ में प्राप्त हुई अन्य सेवा

२५,०००/ प्रणामी एज्युकेशन एल. एल. पी. मां डीपोजीट

श्रीमती दयाबेन नरसीभाई हापलिया-राजकोट.

२५०००/ प्रणामी एज्युकेशन एल. एल. पी. मां डीपोझीट

धामवासी भूपतसंग रवाजीभाई वारा. हस्ते : रमाबेन वारा-कानालुश.

सुश्री इलाबेन अरविंदभाई पटेल(संदेशर-आणंद) हाल शिकागोकी ओरसे २०० डोलरनी सेवा प्राप्त हुई है।

श्री भगवानभाई लवजीभाई चोवटिया-जामनगरकी ओरसे मानव सेवा प्रकल्पमें ५०००/ प्राप्त हुए हैं।

श्री शैलेषभाई एच. भद्रा-जामनगरकी ओरसे मानव सेवा प्रकल्पमें ५०००/ प्राप्त हुए हैं।

रसोईकी सेवा

०१. श्री गोबरभाई अर्जुनभाई सावलिया-	जामनगर
०२. धा.वा. देवजीभाई नथ्थुभाई संघाणी-	ठेबा
०३. चि. श्रील अशोकभाई पटेल-	सुन्दलपुरा
०४. धा.वा. बाबुलाल खेतशीभाई कोटक तथा धा.वा. मुक्ताबेन बाबुलाल कोटक हस्ते: श्री अश्विनभाई बाबुलाल कोटक-	वांकानेर
०५. श्रीकान्तिभाई मोहनभाई सिद्धपुरा-	हर्षदपुर(यु.के.)
०६. श्री मथुरभाई उकाभाई फाचरा-	धुडशिया
०७. डॉ. भाईलालभाई जेठाभाई पटेल-	गाबट
०८. धा.वा. शान्ताबेन माधवजीभाई वडगामा-	जामनगर

०९. धा.वा. नाथाभाई कानजीभाई सोरठिया–	गोकुलपुरा
१०. धा.वा. दमयन्तीबेन जादवजीभाई माणेक–	मुम्बई
११. धा.वा. शान्ताबेन मणिलाल पटेल–	चिखोदरा
१२. डॉ. प्रवीणभाई सी. परीख–	मुम्बई
१३. धा.वा. जमनादास पी. ठक्कर–	मुम्बई
१४. श्री कमलेशभाई रणछोडभाई चोवटिया–	वडोदरा
१५. चि. कु. देविकाबेन रजनीकान्तभाई भण्डेरी–	अहमदाबाद(यु.के.)
१६. श्रीमती सुशीलाबेन गोपालभाई पटेल–	सलाल(यु.एस. ए.)
१७. धा.वा. नर्मदाबेन चिमनभाई पटेल–	मोरबी
१८. श्री देवांशभाई महेशभाई पंचमतिया–	मुम्बई
१९. धा.वा. नारणभाई हीराभाई गुन्दासरा–	हरिपर
२०. ब्रह्मलीन बाबाजी श्री लक्ष्मीदासजी महाराज–	श्री ५ नवतनपुरी धाम
२१. चि. यश नरेश रमणभाई पटेल–	आमोदरा(यु. एस. ए.)
२२. धा.वा. रम्भाबेन खोडाभाई सावलिया–	अलीयाबाडा
२३. श्री हरिशंकर श्रेष्ठ–	काठमाडौं(नेपाल)
२४. धर्म प्रचारक मण्डल नेपाल तथा नेपालवासी सुन्दरसाथ–	नेपाल
२५. श्री रमणिकभाई मूलजीभाई दुधागरा–	ध्रोल
२६. धा.वा. भोवानभाई मेघजीभाई ताला–	छत्तर
२७. श्री जयदीप प्रणामी–	मुम्बई
२८. श्री मोहनलाल हरजीभाई पेन्टर–	अंजार
२९. श्री वल्लभभाई मोहनभाई पानसुरिया–	मोटी मेंगणी
३०. श्री राज प्रीतेशभाई चौहाण–	अंजार

जाम्बुआ (दाहोद) में नलवाया परिवार द्वारा आयोजित स्मृति महोत्सवके दृश्य ।

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर गणदेवीका उद्घाटन एवं पूजा पधरावनी महोत्सवपर आयोजित
श्री तारतम सागरके पञ्चदिवसीय १०८ पारायणका शुभारंभ एवं आशीर्वाद प्रदान करते
हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं उपस्थित शीर्षस्थ गुरुजन ।

साहियापुर (सा.कां) निवासी धर्मपरायण श्री डाह्याबापा एवं परिवार द्वारा
धामवासी माताजी डाहीबहनकी स्मृतिमें आयोजित परायणके दृश्य ।

RNI No. GUJ BIL /2006/18311 Registration No. GJN-1 / 2009-2011

केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तावित सामुदायिक एवं लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयकके प्रतिकारके लिए भारतीय संस्कृति सभा द्वारा दिल्लीमें आयोजित शीर्षस्थ सन्त सम्मेलनके दृश्य ।

जामनगरमें आयोजित सद्‌भावना मिशनके अवसर पर गुजरातके माननीय मुख्यमन्त्री श्री नरेन्द्रभाई मोदीको उत्तरीय वस्त्र ओढ़ाकर श्री ५ नवतनपुरी धामके आशीर्वाद प्रदान करते हुए स्वामी लक्ष्मण चैतन्य ।

श्री ५ नवतनपुरी धाममें दिनांक २७ से ३१ दिसम्बर २०११ पर्यन्त आयोजित श्री कृष्ण प्रणामी धर्म प्रचारक गोष्ठीमें चरचा करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं उपस्थित संत विद्वद्‌जन ।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके प्राकट्योत्सवके पुनित अवसर
दिनांक १-१-२०१२ पर श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित रक्तदान केम्प ।

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA
SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)